INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: IX	Department: Hindi	Date of submission:NA
Question Bank	Topic: मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय	Note: PI.file in portfolio

कहानी - मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय - लेखक: धर्मवीर भारती

प्रश्न - {1} लेखक का ऑपरेशन करने से सर्जन क्यों हिचक रहे थे ?

उत्तर: हार्ट अटैक के तीन ज़बरदस्त झटकों के बाद ऐसा लगा कि अब लेखक में प्राण नहीं रहे, इसलिए जोखिम उठाते हुए डॉ. बोर्जेस ने उन्हें नौ सौ वोल्ट्स के शॉक्स दिए। प्राण तो इससे लौट आए पर 60 प्रतिशत हार्ट सदा के लिए नष्ट हो गया। चालीस प्रतिशत हार्ट में भी तीन अवरोध (blockage) थे। ऐसे में डॉक्टरों को डर था कि चालीस प्रतिशत हार्ट ऑपरेशन के बाद भी रिवाइव (पुनर्जीवित) नहीं हुआ तो जान जा सकती है।

प्रश्न {2} 'किताबों वाले कमरे' में रहने के पीछे लेखक की क्या भावना थी ?

उत्तर: लेखक बीमारी की निराशा से उबरने के लिए विश्व के प्रतिष्ठित लेखकों और उनकी कृतियों के बीच रहना चाहता था।

प्रश्न {3} लेखक के घर कौन-कौन सी पत्रिकाएँ आती थीं ?

उत्तर: लेखक के घर 'आर्यमित्र साप्ताहिक', वेदोदम, सरस्वती, गृहिणी और दो बाल पत्रिकाएँ- बालसखा और चमचम आती थीं।

प्रश्न {4} लेखक को किताबें पढ़ने और सहेजने का शौक कैसे लगा ?

उत्तर: लेखक के घर नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं। उनमें परियों, राजकुमारों, दानवों की कहानियाँ होती थीं। धीरे-धीरे उनकी रुचि जागृत होती गई। वे घर में आने वाली सभी पुस्तकों को पढ़ने और सहेजने लगे।

प्रश्न {5} माँ लेखक की स्कूली पढ़ाई को लेकर क्यों चिंतित रहती थीं ?

उत्तर: लेखक घर में आने वाली सभी पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों को पूरे दिन बड़े चाव से पढ़ा करता। माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती थी और चिंतित रहती थी कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता। इसलिए पास कैसे होगा। कहीं साधु बनकर घर से भाग तो नहीं जाएगा।

प्रश्न {6} स्कूल से इनाम में मिली अंग्रेज़ी की दोनों पुस्तकों ने किस प्रकार लेखक के लिए नए द्वार खोल दिए ?

उत्तर: इनाम में पुस्तकें मिलने पर लेखक खुश था। इन दो किताबों ने नई दुनिया के द्वार लेखक के लिए खोल दिए। पक्षियों से भरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। उस दिन उसके पिता ने अपनी अलमारी का खाना खाली कर लेखक से कहा आज से तुम अपनी पुस्तकें यहाँ रखा करो। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है। इससे लेखक बहुत उत्साहित हुआ।

प्रश्न {7} 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है'- पिता के इस कथन से लेखक को क्या प्रेरणा मिली ?

उत्तर: पिता के इस कथन से लेखक को लाइब्रेरी बनाने की प्रेरणा मिली। जिस लाइब्रेरी की नींव पिता ने रखी वे स्कूल से कॉलेज, यूनिवर्सिटी, डॉक्टरेट, अध्यापन, संपादन तक के अपने सफ़र में लाइब्रेरी का विस्तार करते गए।

प्रश्न {8} लेखक द्वारा पहली पुस्तक खरीदने की घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर: लेखक 12वीं पास करने के बाद बी.ए. की सेकंड हैंड बुकशॉप पर गया। पुस्तकें खरीदने पर दो रुपए बच गए | सिनेमाघर में उन दिनों 'देवदास' लगी हुई थी | पर माँ को सिनेमाघर जाना बिलकुल पसंद नहीं था। उनका मानना था कि इससे बच्चे बिगड़ते हैं। इस फिल्म के एक गाने 'दुख के दिन अब बीतत नाहीं' को लेखक अक्सर गुनगुनाते रहते थे और कभी-कभी गुनगुनाते हुए आँखों में आँसू आ जाते थे। जब माँ को मालूम हुआ यह फिल्म 'देवदास' का गाना है तब माँ ने उन्हें फिल्म देखने की आज्ञा दे दी। फिल्म शुरू होने में कुछ ही देर थी तब तक उनकी नज़र किताबों की दुकान के काउंटर पर रखी किताब 'देवदास' पर पड़ी। और उनका मन फिल्म से पलट गया तथा उन्होंने अपनी पहली किताब 'देवदास' खरीद ली।

प्रश्न {9} 'इन कृतियों के बीच अपने को भरा-भरा महसूस करता हूँ'- का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लेखक के पुस्तकालय में विश्व के महान साहित्यकारों की प्रसिध्द कृतियाँ थीं जो सभी पढ़कर सहेज कर रख दी थीं। उनके बीच लेखक को तृप्ति और आनंद मिलता था। वह अपने को भरा-भरा महसूस करता था।

मूल्यपरक प्रश्न

प्रश्न {1} पुस्तकों द्वारा किन मूल्यों को अपनाकर जीवन को समृध्द बनाया जा सकता है? कहानी 'मेरा छोटा - सा निजी पुस्तकालय' के आधार पर बताइए।

उत्तर: पुस्तकें व्यक्तिगत ज्ञान में वृध्दि करने का एक अमूल्य साधन हैं । मनुष्य स्वभावत: क्रियाशील होता है । चुपचाप बैठना उसके लिए संभव नहीं है । मनुष्य की इसी प्रवृत्ति के कारण समाज में समय-समय पर क्रोध, घृणा, भय, आश्चर्य, शांति, उत्साह, करुणा, दया, आशा तथा हर्षोल्लास का आविर्भाव होता है । पुस्तक का लेखक इन्हीं भावनाओं को मूर्त रूप देकर पुस्तकों की रचना करता है । पुस्तकों में मानवीय गतिविधियों का वर्णन होता है । अतः पुस्तकों से हम विभिन्न अच्छे विचारों को अपनाकर अपने चरित्र को द्विगुणित कर सकते हैं । पुस्तकें मनोरंजन का साधन भी होती हैं । इन्हें अकेले का साथी भी कहा गया है । अतः अतिरिक्त समय में पुस्तकें पढ़कर हम इस समय का सदुपयोग कर सकते हैं ।

प्रश्न 2. पुस्तकें गुणों की खान हैं । उच्च कोटि का साहित्य पढ़ने से किन महान गुणों का समावेश स्वत: ही हमारे व्यक्तित्व में हो जाता है ? कहानी 'मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय' के आधार पर बताइए ।

उत्तर: उच्च कोटि का साहित्य सभी गुणों से संपन्न होता है । अतः ऐसे साहित्य की शरण में रहने से उच्च कोटि की भावनाओं का संचार होना स्वाभाविक है । इससे भाषा परिमार्जित होती है । उसमें विस्तारित तथ्यों से बौधिक विकास होता है । सद्व्यवहार में वृद्धि होती है तथा समाज की कुरीतियों को समाप्त करने की प्रेरणा मिलती है ।

प्रश्न 3. किताबों वाले कमरे में रहने के पीछे लेखक की क्या भावना थी ? किताबों से लेखक को क्या मिलता था ? इसके माध्यम से लेखक ने किन मूल्यों को उपस्थित किया है ?

उत्तर: लेखक बीमारी की निराशा से उबरने के लिए विश्व के प्रतिष्ठित लेखकों और उनकी कृतियों के बीच रहना चाहता था । किताबें लेखक को शब्द की शक्ति का अहसास कराती थीं, जिससे उनमें जीवन का संचार होता था । इसके माध्यम से जीवन में किताबों की महत्ता को प्रतिपादित किया है ।

प्रश्न 4. किताबें पढ़ने और सहेजने से लेखक के व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर: लेखक के घर नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं । उनमें परियों, राजकुमारों, दानवों की कहानियाँ होती थीं । धीरे-धीरे उनकी रुचि जागृत होती गई । वे घर में आने वाली सभी पुस्तकों को पढ़ने और सहेजने लगे । इससे उनका व्यक्तित्व जिज्ञासु होता गया । उनमें ज्ञान-प्राप्त करने की प्रबल इच्छा जागृत हो गई । उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास हुआ ।

प्रश्न 5. 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का । यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है' - पिता के इस कथन से लेखक के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर: पिता के इस कथन से लेखक को लाइब्रेरी बनाने की प्रेरणा मिली । जिस लाइब्रेरी की बुनियाद पिता ने रखी वे स्कूल से कॉलेज, यूनिवर्सिटी, डॉक्टरेट, अध्यापन, संपादन तक के अपने सफ़र में लाइब्रेरी का विस्तार करते गए । उनमें जानने की इच्छा बढ़ती गई । वह स्वयं एक बड़े लेखक बनकर उभरे ।

प्रश्न 6. मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?

उत्तर: धर्मवीर भारती लिखित इस आत्मकथात्मक कहानी में लेखक ने अपने पुस्तक प्रेम को उजागर किया है । लेखक के घर बचपन से ही पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं, अत: उन्हें बचपन से ही पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने का शौक लग गया था । उन्हें अपनी लाइब्रेरी बनाने की प्रेरणा, अपनी पहली निजी पुस्तक की खरीदी इत्यादि का सरस एवं सुग्राह्य वर्णन हमें पुस्तक पढ़ने और उन्हें सहेजकर रखने के लिए प्रेरित करता है ।

प्रश्न 7. 'इन कृतियों के बीच अपने को कितना भरा-भरा महसूस करता हूँ |' पंक्ति से आप किन मूल्यों का निष्कर्ष निकाल सकते हैं ?

उत्तर: प्रश्नोक्त पंक्ति लेखक के पुस्तक प्रेम को अभिव्यक्त करती है । लेखक के पुस्तकालय में विश्व के महान साहित्याकारों की प्रसिद्ध प्रतियाँ थीं जो लेखक ने अपने बाल्यकालसे लेकर अब तक बड़े जतन से जुटाई थीं । अत: लेखक उन पुस्तकों के बीच स्वयं को आनंदित महसूस करता था । लेखक का असीम पुस्तक प्रेम हमें पुस्तकों से प्रेम का सन्देश देता है ।

प्रश्न 8: लेखक श्री धरमवीर भारती ने फिल्म देखने के लिए मिले पैसे से पुस्तक कैसे खरीदी इससे आप किन मूल्यों का निष्कर्ष निकाल सकते हैं?

उत्तर: लेखक 12वीं पास करने के बाद बी.ए. की सेकंड हैंड बुकशॉप पर गया । पुस्तकें खरीदने पर दो रुपए बच गए । सिनेमाघर में उन दिनों 'देवदास' लगी हुई थी । पर माँ को सिनेमाघर जाना बिलकुल पसंद नहीं था । उनका मानना था कि उससे बच्चे बिगड़ते हैं । उस फिल्म के एक गाने 'दुख के दिन अब बीतत नहीं' को लेखक अक्सर गुनगुनाते रहते थे और कभी-कभी गुनगुनाते हुए आँखों में आँसू आ जाते थे । जब माँ को मालूम हुआ, यह फिल्म 'देवदास' का गाना है तब माँ ने बेटे को फिल्म देखने की आज्ञा दे दी । फिल्म शुरू होने में कुछ ही देर थी तब तक उनकी नज़र किताब की एक दुकान के काउंटर पर रखी किताब 'देवदास' पर पड़ी और उनका मन फिल्म से पलट गया तथा उन्होंने अपनी पहली किताब 'देवदास' खरीद ली । प्रश्नोक्त प्रसंग हमें अपने माता-पिता की भावनाओं का सम्मान, पुस्तकों के प्रति प्रेम, आत्मानुशासन, उत्तरदायित्व, परिपक्वता तथा सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने जैसे मूल्यों की सीख देता है ।